हिमालयन दिवस आयोजन की रिपोर्ट (9.9.2023)

Report on Himalayan Day Celebration (9.9.2023)

भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने 09.09.2023 को संस्थान के सम्मेलन कक्ष मे हिमालयन दिवस- 2023 मनाया । सभी प्रतिभागियों द्वारा हिमालय को बचाने की शपथ ली गई । डॉ॰ जोगिंद्र सिंह चौहान ने मुख्य वक्ता, निदेशक एवं समस्त उपस्थित वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवम कर्मचारियों का स्वागत किया । डॉ जगदीश सिंह हिमालय के महत्व पर अपने विचार रखे । डॉ॰ लाल सिंह ने कहा कि इस वर्ष का थीम है हिमालय और आपदा है । यदि हिमालय फलता फूलता है, तो मानवता विकसित होती है । हिमालयी क्षेत्रों में आपदाओं में दो महत्वपूर्ण भाग हैं, जिसमें से एक भाग स्थानीय है, जिसके लिए हम विकास की योजनाओं को दोषी ठहरा सकते हैं । दूसरा भाग धरती पर बढ़ते तापमान का है, जिसका सीधा असर हिमालय के जलवायु परिवर्तन पर पड़ता है । इस बार हिमाचल प्रदेश में आई आपदा और इससे पहले उत्तराखंड में आई आपदायें जलवायु परिवर्तन के कारण मानी जा रही । जलवायु परिवर्तन के कारण वैश्विक तापमान वृद्धि के असर से कोई देश नहीं बचा है । इसके असर दुनिया के हर क्षेत्र में दिख रहे है । पृथ्वी में दो तिहाई समुद्र है, सागर के तापमान बढ़ने से वर्षा पैटर्न पर बहुत असर पड़ता है । जिससे समुद्र तट पर और पर्वतीय क्षेत्रों में बसे लोग सीधे तौर पर प्रभावित होते हैं । हिमालयन क्षेत्र का सरंक्षण हम सभी का दायित्व है । सभी जानते है कि पहाड़ों पर प्लास्टिक कचरा बहुत तेजी से बढ़ रहा । सरकार इस पर आवश्यक कदम उठा रही है परंतु आम नागरिक का सहयोग अति आवश्यक है । पर्यटक और ट्रैकर हर वर्ष हजारों टन कचरा हिमालय क्षेत्र में छोड़कर जा रहे हैं । उन्होंने का कि सतत विकास पर्यावरण के लिए जरूरी है । इसके अलावा उन्होंने हिमालय क्षेत्रों में रहने वाले ग्रामीण लोगों की आजविका वृद्धि के लिए जरूरी कदम उठाने पर बल दिया । डॉ. संदीप शर्मा, निदेशक ने कहा कि इस वर्ष हिमाचल प्रदेश में इस वर्ष मानसून की आपदा ने बहुत नुकसान पहुंचाया है । विकास की अंधी दौड़ हिमालय क्षेत्र को भारी नुकसान पहुंचा रही है । विकास जरूरी है परंतु विकास और परिस्थितिकी में संतुलन बनाए रखना नितांत आवश्यक है । हमे अपने पूर्वजों से सीख लेनी चाहिए कि किस तरह प्रकृति के साथ तालमेल बैठाकर आगे बढ़ना होगा । हिमालय क्षेत्र में शहरों को खराब भवन योजना और डिजाइन, सड़क, जल आपूर्ति, सीवेज आदि जैसे खराब बुनियादी ढांचे और पेड़ों की अभूतपूर्व कटाई के कारण कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिससे गंभीर पारिस्थितिक समस्याएं उत्पन्न होती हैं । अतः गहन विश्लेषण कर योजना बनाने की आवश्यकता है । इस अवसर पर संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, परियोजना कर्मचारियों और फील्ड स्टाफ सहित 50 लोग उपस्थित रहे । डॉ. जोगिंद्र सिंह चौहान द्वारा औपचारिक धन्यवाद के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ ।

GLIMPSES OF THE PROGRAMME

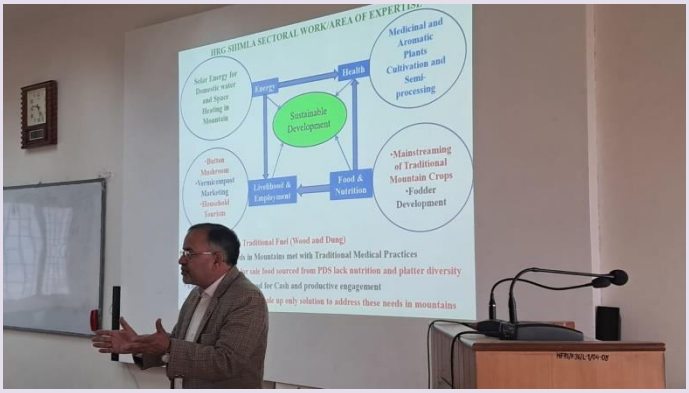

Media Coverage

शिमला केसरी

रविवार SUNDAY 10 सितम्बर 2023

विकास की अंधी दौड़ हिमालय को पहुंचा रही नुक्सान : डा. संदीप

बोले, शहरी क्षेत्रों में गहन विश्लेषण कर योजना बनाने की आवश्यकता

शिमला, 9 सितम्बर (भूपिन्द्र): विकास की अंधी दौड़ हिमालय क्षेत्र को भारी नुक्सान पहुंचा रही है। विकास जरूरी है, लेकिन विकास और परिस्थितिकी में संतुलन बनाए रखना नितांत आवश्यक है। हमें अपने पूर्वजों से सीख लेनी चाहिए कि किस तरह प्रकृति के साथ तालमेल बैठाकर आगे बढ़ा जाता है। यह बात निदेशक हिमालयन रिसर्च संस्थान शिमला के निदेशक डा. संदीप शर्मा ने शनिवार को हिमालयन दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि हिमालय परिस्थितिकी पर खतरा मंडरा रहा है। उन्होंने कहा कि हिमालय क्षेत्र में शहरों को खराब भवन योजना और डिजाइन, सड़क, जल आपूर्ति व सीवरेज आदि जैसे खराब बुनियादी ढांचे और पेड़ों की अभूतपूर्व कटाई के कारण कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिससे गंभीर परिस्थितिक समस्याएं उत्पन्न होती हैं। अतः गहन विश्लेषण कर योजना बनाने की आवश्यकता है।

हिमालयी क्षेत्रों में आपदाओं के दो भाग : हिमालयी क्षेत्रों में आपदाओं के 2 महत्वपूर्ण भाग हैं, जिसमें से एक भाग स्थानीय है, जिसके लिए हम विकास की योजनाओं को दोषी ठहरा सकते हैं। दूसरा भाग धरती पर बढ़ते तापमान का है, जिसका सीधा असर हिमालय के जलवायु परिवर्तन पर पड़ता है। हिमाचल प्रदेश व उत्तराखंड में आई आपदाएं जलवायु परिवर्तन के कारण मानी जा रही हैं। पृथ्वी में दो तिहाई समुद्र है, सागर के तापमान बढ़ने से वर्षा पैटर्न पर बहुत असर पड़ता है। हिमालयन क्षेत्र का संरक्षण हम सभी का दायित्व है। पर्यटक और ट्रैकर हर वर्ष हजारों टन कचरा हिमालय क्षेत्र में छोड़कर जा रहे हैं। अगर यही हालत रहे तो संवेदनशील हिमालय क्षेत्र के पर्यावरण, जंगल और पानी के स्रोतों पर संकट और गहरा जाएगा ।

कच्चा माल नहीं प्रोडक्ट बेचने की जरूरत : निदेशक हिमालयन रिसर्च ग्रुप शिमला डा. लाल सिंह ने कहा कि हमें कृषि व हिमालय में पैदा होने वाला कच्चा माल के स्थान पर प्रोडक्ट (उत्पाद) बेचने की जरूरत है। कच्चा माल बेचने से न तो रोजगार का अवसर सृजित हो रहे हैं और न ही कृषि लाभकारी होगी। उन्होंने कहा कि हमें हिमाचल में उगने वाली जड़ी-बूटियों को दवाई बनाकर बेचनी होगी। इससे इनका अधिक दोहन भी नहीं होगा और पर्यावरण भी खराब नहीं होगा।

शिमला : हिमालयन रिसर्च संस्थान में हिमालयन दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में हिमालय को बचाने की शपथ लेते हुए प्रतिभागी। (छाया)

****